B.A. I Hons Hindi के छात्रों के लिए

'चित्रलेखा उपन्यास में पात्र नियोजन'
का शेषांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक,
हिन्दी विभाग, एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

सामन्त मृत्युंजय इस उपन्यास में उपस्थित होकर कथानक को एक मोड़ देते हैं। अब तक की सीधी सपाट कथा में घूर्णावर्त पैदा कर देते हैं। यद्यपि उनकी उपस्थिति सीमित है किन्तु बहुत महत्वपूर्ण है।

नारी पात्र —

यशोधरा एवं चित्रलेखा इस उपन्यास में मात्र दो ही नारी पात्र हैं। संख्या यद्यपि सीमित है किन्तु दोनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चित्रलेखा इस उपन्यास की वह धुरी है जिसके चारो ओर कथानक घूमता है। उपन्यास का आरंभ चित्रलेखा के प्रवेश के साथ होता है और उसका

समापन चित्रलेखा के सर्वस्व त्याग कर भिक्षुणी बनकर ~~जाने के साथ~~ पाटलिपुत्र से बीजगुप्त के साथ निकल जाने के साथ होता है। चित्रलेखा इस उपन्यास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पात्र है। उपन्यास के समस्त पात्रों की वह केन्द्र बिन्दु है। सारे पात्र उससे किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं। यह जुड़ाव भी उसकी प्रधानता को रेखांकित करता है।

यशोधरा का प्रवेश इस उपन्यास के मध्य में होता है। वह अत्यन्त सरल एवं शान्त जीवन यापन करती है किन्तु उसकी उपस्थिति मात्र से उपन्यास के ~~क~~ कथानक में एक आलोड़न पैदा हो जाता है। ~~इस~~ यशोधरा अपनी उपस्थिति से समस्त पात्रों को न केवल प्रभावित करती है बल्कि कथानक की दिशा बदल देती है। जो कथानक अब तक सीधा-सरल था उसमें अब मोड़ आने लगते हैं और कथा तेजी से अपने विराम की ओर बढ़ चलती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चित्रलेखा में पात्रों की योजना अत्यन्त संतुलित है। व्यर्थ अथवा अनावश्यक पात्रों की भीड़ इसमें नहीं है इसके कारण पात्र योजना में एक चमत्कार पैदा हो गया है। इस उपन्यास के सारे पात्र प्रभावशाली हैं तथा अपनी-अपनी भूमिकाओं में सफल हैं। यद्यपि ऐसे भी स्थल इस उपन्यास में उपलब्ध होते हैं जहाँ प्रतीत होता है कि कतिपय पात्रों के व्यवहार में स्वाभाविकता नहीं है, किन्तु ऐसे स्थल थोड़े हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि चित्रलेखा उपन्यास की पात्रयोजना न केवल सफल है बल्कि प्रभावशाली है। इन्हीं उपकरणों से यह उपन्यास न केवल हिन्दी जगत वरन् विश्व साहित्य में भी कालजयी रचना के रूप में अपना जय घोष कर रहा है।